जुस्तजू

ज़िंदगी एक लम्बा सफ़र है। इस सफ़र में कई मुक़ाम होते हैं और कई मंज़िलें। कुछ मंज़िलें जानी पहचानी होती हैं और कुछ मंज़िलें बिलकुल अनजान; इस हद तक अनजान कि हमें उन मंज़िलों के वजूद का पता ही नहीं होता।

कई बार ऐसा होता है कि कई बेचैन से पलों में हम खुशियों से कोसों दूर होते हैं और बेचैनी के कारणों से पूरी तरह बेख़बर रहते हैं। कभी हम उन कारणों की खोज करने की कोशिश ही नहीं करते, और कभी करते हैं पर सफ़ल नहीं होते; अगर सफ़ल हो जाते हैं तो किसी कशमकश में पड़ जाते हैं। कभी ऐसा भी होता है कि कुछ पल हमें अचानक ही, बिना किसी उम्मीद या आरज़ू के, ढेर सी ख़ुशियाँ दे देतें हैं। मग़र जब तक हम उन ख़ुशियों का लुत्फ़ लें, अकसर वो लमहें हमारे हाथों से फ़िसल जाते हैं। ये सभी पल हमारी अनजान मंज़िलों की जुस्तजू की पहचान हैं।

प्रस्तुत ग़ज़लें मेरी ऐसी अनजान जुस्तजू के लमहों की दास्तान हैं। इस सफ़र की बस शुरुआत होती है, अंत नहीं होता। यह संकलन भी ऐसे सफ़र की तरह अपूर्ण है और वक़्त के साथ इस में नई ग़ज़लें नए मुक़ाम की तरह शामिल होतीं जाएंगी।

उदय खेड़कर

This work is licensed under a *Creative Commons Attribution-No Derivative Works 3.0 Unported License* (http://creativecommons.org/licenses/by-nd/3.0/). You are free to copy, distribute and transmit the work. You must attribute the work to the author (but not in any way that suggests that they endorse you or your use of the work). You may not alter, transform, or build upon this work. For any reuse or distribution, you must make clear to others the license terms of this work.

First release date: 19 October 2009.

अनुक्रमणिका

ज़िंदगी..1
ख़ामोशी..2
जुस्तजू..3
सफ़रनामा..4
सवाल–जवाब..5
बदलाव 7
दास्ताने–मुहब्बत 8
सालगिरह की दुआ..9

ज़िंदगी

जुस्तजू में जाने किस, गुज़र गई ज़िन्दगी |
हमने ये मान लिया, सुधर गई ज़िन्दगी ||

तरक्कियाँ हुई कईं दस्तूरे ज़िंदगी में ।
कुछ तो हासिल हुआ, मगर गई ज़िन्दगी ||

दीन और दोस्तों का, साथ छूट सा गया |
इक अन्धेरे कुएँ में, उतर गई ज़िन्दगी ||

सफ़र हयात का बस, यूं ही चलता रहा ।
ख़ुद से पूछते चले, किधर गई ज़िन्दगी ?

हर सवाल का हमें, मिला सीधा–सा जवाब |
हम रहे बेख़बर, बिखर गई ज़िन्दगी ||

दोस्तों की फ़िर हमारे, ख़बर हमें मिल गई |
कुछ तसल्ली हुई, संवर गई ज़िन्दगी ||

याद हर महक उठी, पल पुराने जी उठे ।
उदय तेरी फ़िर से अब, निखर गई ज़िन्दगी ||

नए सिरे से हुई, दोस्तों से दोस्ती |
खुशी बिखेरती चली, जिधर गई ज़िन्दगी ||

–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–

ख़ामोशी

अपने जज़्बातों का कैसे, मैं खुलकर इज़हार करूँ ?
बरसों तक जो कर ना पाया, वो कैसे अब यार करूँ ?

तुमने तो कह दिया अचानक, "कह दो, अपने दिल की बात" ।
कह ना पाऊँ यार तुम्हें पर, कैसे मैं इनकार करूँ ?

हर दम चाहा मेरे दिल ने, बात समझ लो दिल की तुम ।
अगर हो गया ऐसा तो मैं, कैसे नज़रें चार करूँ ?

बेक़रार जब देखा मुझको, सबब पूछ लिया तुमने ।
ख़ामोश रह गया असमंजस में, कैसे मैं इकरार करूँ ?

फिर तुमने ध्यान दिया ना पूछा, मेरे दिल का हाल कभी ।
अंजाम उदय ये ख़ामोशी का, क्यों दिल को बेज़ार करूँ ?

ग़ज़ल लिखी ये किसकी ख़ातिर, लोगों ने जब ऐसा पूछा ।
टाल दिया है आज तो मैंने, पर मैं क्या हर बार करूँ ?

ख़ामोशी की मेरी भाषा, पहुँच अगर ना पाए तुम तक ।
बतला दे ऐ यार मेरे मैं, कैसे तुम से प्यार करूँ ?

–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–

जुस्तजू

आख़िर किस मर्ज़ की दवा चाहिए ?
और मुझे ज़िंदगी में क्या चाहिए ?

जुनून कई सर चढ़े, और फ़िर उतर गए ।
नया जुनून और नया नशा चाहिए ।।

परेशां ज़िंदगी ने, बेदिली से ये कहा ।
अब ज़िंदगी में कुछ नया चाहिए ।।

तेरा मुझपे ऐतबार, हासिले–ज़िंदगी ।
बस ज़रासा हौसला चाहिए ।।

बन जाएगा मेरा, ख़ाब हर हक़ीक़त ।
यार मुझे बस तेरी दुआ चाहिए ।।

हो जाएगा पार सैलाबी दरिया भी ।
नाख़ुदा मेरा बस ख़ुदा चाहिए ।।

तू न बन पाएगा, क़ातिल कभी मेरा ।
क़ातिलों में और कुछ अदा चाहिए ।।

ख़्वाहिशें नईं उदय, और नया हौसला ।
ज़िंदग़ी को नया इम्तिहाँ चाहिए ।।

ग़म पुराने छोड़कर, ख़ुशी की तलाश में ।
एक नई सी इब्तिदा चाहिए ।।

–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–

सफ़रनामा

गुनाह मैंने एक यही, किया बार बार ।
ज़िंदगी मैंने तुमपे किया ऐतबार ।।

हसीन महकते फ़ूल, चमन में हैं मगर ।
तेरी सादगी ने मुझे किया गिरफ़्तार ।।

राहें तयशुदा जुदा, मैंने ये क़ुबूल किया ।
फ़िर भी मेरे दिल ने तेरा किया इन्तज़ार ।।

मुस्तक़िल रहा मेरा, दिल मुश्किलों में ।
शबनमी पलों ने पर किया बेक़रार ।।

मुश्किलों की जंग छिड़ी, हौसले से जब मेरे ।
मुश्किलों को हौसले ने किया शर्मसार ।।

हमदर्द की तलाश में, हमें सिर्फ़ दर्द मिला ।
दर्द से भी प्यार मैंने किया बेशुमार ।।

मेरी हर ख़ुशी तेरी, और तेरे ग़म मेरे ।
दोस्तों से उदय यही किया कारोबार ।।

दर्द का दरिया और ग़ज़ल की कश्ती ये ।
जिंदगी का सफ़र हमने किया यादगार ।।

–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–

सवाल-जवाब

प्रस्तुत ग़ज़लें कुछ "हट के" हैं । gecjbpentc1986@yahoogroups.com के दोस्तों ने कई सवाल पूछकर मुझे इन ग़ज़लों को लिखने की प्रेरणा दी है इसलिए ये ग़ज़लें इन सदस्यों को समर्पित हैं । इन ग़ज़लों का form भी कुछ अलग है, मगर वो बातें यहाँ लिखना शायद ग़ैर-ज़रूरी है।

सवाल

क्या दिक्कत है उदय तुम्हें, क्या है परेशानी, क्यों बोर कर रहे हो ?
मत लिखो ग़ज़ल अब तुम, करो न आनाकानी, क्यों बोर कर रहे हो ?

हमने सुन ली एक ग़ज़ल तो, शुरु हो गए तुम !
आँखों में अब तो हमारी, आ गया है पानी, क्यों बोर कर रहे हो ?

एक बार गलती से हमने, "वाह वाह" कह दिया ।
पड़ गई मुश्किल में फ़िर, हमारी ज़िंदगानी, क्यों बोर कर रहे हो?

मामलों में दिल के उफ़, औकात तुम्हारी क्या है ।
जानते हैं हम सब कुछ, हम से सुनो कहानी, क्यों बोर कर रहे हो?

चुराते हो लाइनें तुम, क्या ख़ाक ग़ज़ल लिखते हो !
बंद करो अब ये अपनी, लफ़्फ़ाज़ी मनमानी, क्यों बोर कर रहे हो ?

हमने सोचा था ग्रुप में, मजे करेंगे सबके साथ ।
तुम्हें मुबारक हो तुम्हारी, सारी परेशानी, क्यों बोर कर रहे हो?

डरते हैं हम कहीं दोस्ती, दुश्मनी में बदल न जाए ।
करो दोस्ती पर ज़रासी, अब तुम मेहरबानी, क्यों बोर कर रहे हो?

यार तुम्हें तो अब तक हमने, समझाया है प्यार से ।
मतलब इन इशारों का, समझा करो जानी, क्यों बोर कर रहे हो?

जवाब

हमें बोर कर रही है जब, हमारी ज़िंदगी, क्यों न हम तुम्हें बोर करें ?
अपने इस ग्रुप का जब, मकसद है मस्ती, क्यों न हम तुम्हें बोर करें ?

दर्द सबको मिलता है बस, चुभन अलग हो सकती है ।
यही बात बस हमने अपनी, ग़ज़ल में कह दी, क्यों न हम तुम्हें बोर करें ?

ग्रुप में सवाल जवाब हुए जो, हमने वही लिखे ग़ज़ल में ।
फ़िर भी लगती हैं लाइनें, अगर तुम्हें चोरी की, क्यों न हम तुम्हें बोर करें ?

तुम जो नाम पूछ रहे हो, कभी नहीं ले सकते हम ।
जब हॅरी पॉटर की तुमने, पिक्चर नहीं देखी, क्यों न हम तुम्हें बोर करें ?

सवाल पूछ लो अब तमाम तुम, कुछ भी दिल में मत रहने दो ।
चार दिन की है हमारी, ज़िंदगी इकलौती, क्यों न हम तुम्हें बोर करें ?

ठान लिया है अब हमने भी, यारों ग्रुप में अपने ।
जब तक बोर करने पर, रोक नही लगती, क्यों न हम तुम्हें बोर करें ?

छोड़ो बाकी सबब यक़ीनन, एक बहाना काफ़ी है ।
बहुत पुरानी और गहरी है, दोस्ती अपनी, क्यों न हम तुम्हें बोर करें ?

–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–

बदलाव

नए मोड़ पर आ पहुंचा है, अब देखो ये सफ़र हमारा ।
अगर न मिलना चाहो तुम तो, कुसूर कुछ भी नहीं तुम्हारा ।।

कल तक थे हमराह मगर अब, जुदा हो गईं राहें अपनी ।
कैसे समझाएँ दिल को जो, ज़िंदगी ने किया इशारा ।।

मेरी हस्ती ग़ैरज़रूरी, हुई ज़िंदगी में अब तेरी ।
मान ले कैसे दिल मेरा पर, मजबूरी में दिल भी हारा ।।

पता नहीं था पहले मुझको, असर फ़ासलों का ये होगा ।
दिल की बेक़रारी से दुश्वार हो गया जीवन सारा ।।

शायद हो दीदार कभी पर, मुलाक़ात लगती है मुश्किल ।
अलग मंज़िलें, अलग जुस्तजू, अलग थलग जीवन की धारा ।।

बेहतर होगा अब हो जाउँ अगर दूरियों का मैं आदी ।
अपनी किस्मत में जितना था उतना साथ वक़्त गुज़ारा ।।

शुक्रिया उन लमहों का अब, उदय इतनी ख़्वाहिश है ।
कामयाब और ख़ुशगवार हो, मुख़्तलिफ़ यह सफ़र तुम्हारा ।।

–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–

दास्ताने-मुहब्बत

नाकाम इश्क में जब पहुँचे हम, नाउम्मीदी की कगार तक ।
कैसे हाल हमारा पहुँचा, ना जाने परवरदिगार तक ।।

उल्फ़त के दरिया में उतरे, बेमानी बेताबी से ।
ग़ायब ऐसा हुआ नाख़ुदा, नज़र न आया आर पार तक ।।

जुस्तजू ये राज़दार की, बदली चर्चा में और पहुँची ।
गुमशुदा की तलाश जैसी, अख़बारों से इश्तेहार तक ।।

रब की मर्ज़ी से फ़िर किस्मत बदल गई थोड़ी सी अपनी ।
अरमानों से सफ़र हमारा , हुआ अचानक इंतज़ार तक ।।

मेहरबानियाँ हुईं वक़्त की और यक़ीनन हुआ कमाल ।
कह ना पाए हम जो बात, पहुँच गई वो दिले-यार तक ।।

मुझसे ख़फ़ा नहीं अग़र तू , बदल डाल तू किस्मत मेरी ।
वरना कैसे पहुँचे तेरी, माफ़ी तेरे गुनहगार तक ।।

मौसम बदले यार मिले तो, या फ़िर यार मिले बहार में ।
इन्तज़ारे-ग़मगुसार ये, मुझे रहेगा नौबहार तक ।।

-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-

सालगिरह की दुआ

मेरी यही दुआ है तुमको, ऐसी कुछ ख़ैरात मिले ।
आने वाले हर दिन तुमको, ख़ुशियों की सौग़ात मिले ।।

तेरे अपने रहें हमेशा, अपनों जैसे तेरे साथ ।
तुझे चाहने वालों का, प्यार तुझे दिन रात मिले ।।

बढ़े अज़मतो–शोहरत तेरी, हर दिन दूनी रात चौगुनी ।
क़ाबिल अज़ीज़ बने हैसियत, तुझको ये औक़ात मिले ।।

तेरी, तेरे अपनों की भी, हर हसरत हो जाए पूरी ।
जो भी चाहो तुम दिल से वो, यार तुम्हें हर बात मिले ।

हर काम उसे आसान यक़ीनन, जिस पर क़िस्मत हो मेहरबाँ ।
कामयाब हुए तुम तब भी, मुश्किल जब हालात मिले ।।

उदय की बस एक दुआ है, ऐसी मिलें हज़ार दुआएँ ।
पुरजोश दुआओं से ऐसी, भीगी इक बरसात मिले ।।

नसीब हो दिलशाद ज़िंदगी, चैनो–सुकून भरी तुम्हें ।
ख़ुदा सलामत रखे हमेशा, लम्बी तुम्हें हयात मिले ।

–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–o–